
इकाई 29 किसान और आदिवासी विद्रोह

इकाई की रूपरेखा

- 29.0 उद्देश्य
- 29.1 प्रस्तावना
- 29.2 किसान और आदिवासी विद्रोह का उद्भव
- 29.3 कुछ प्रमुख विद्रोह
 - 29.3.1 मन्सरी विद्रोह, 1763-1800
 - 29.3.2 रणपुर (अन्नाम) का किसान विद्रोह, 1763
 - 29.3.3 मीर विद्रोह, 1818-31
 - 29.3.4 मैसूर का विद्रोह, 1830-31
 - 29.3.5 मीर का विद्रोह, 1831-32
 - 29.3.6 कलकूटी विद्रोह, 1838-51
 - 29.3.7 मीरका विद्रोह, 1838-54
 - 29.3.8 मन्सरी विद्रोह, 1855-58
- 29.4 1857 के पूर्व के लोकप्रिय विद्रोहों का संकलन
 - 29.4.1 मैसूर
 - 29.4.2 मीरका और मन्सरी
- 29.5 सारांश
- 29.6 मीर प्रश्नों के उत्तर

29.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- 1857 के पहले होने वाले किसान और आदिवासी आंदोलन की पृष्ठभूमि का उन्मीलन कर सकेंगे,
- इन विद्रोहों के कुछ मुद्दों का वर्णन कर सकेंगे,
- इन विद्रोहों में जातीय और संघर्ष के स्वरूप को रेखांकित कर सकेंगे।

29.1 प्रस्तावना

इस पाठ्यक्रम में भारत में औपनिवेशिक शासन की स्थापना की प्रक्रिया और इसके कमरेजमान अर्थव्यवस्था, साम्य, प्रशासन और जीवन के अन्य क्षेत्रों में होने वाले बदलावों का अध्ययन हम करने का प्रयत्न करेंगे। हम यह समझेंगे और इसके द्वारा भारत में परिवर्तनों की गति पर क्या प्रतिक्रिया हुई? क्या 1857 की क्रांति एक अलग-थलग घटना थी या इसके पहले की इसी प्रकार के विद्रोह विद्रोह से रहे थे? इस इकाई में 1857 के पूर्व अलग-थलग आवाजों के अंत और उत्पीड़न की आवाजों के आरंभ में विदेशी शासन के प्रति किसानों और आदिवासियों के लोभ पर प्रकाश डाला जाएगा। तत्पश्चात् हम इकाई में प्रमुख किसान और आदिवासी विद्रोहों, उनके उद्भव और स्वरूप की बातें की गई हैं।

29.2 किसान और आदिवासी विद्रोह का उद्भव

महोदयों के जाने के पूर्व भारत में प्रमुख राज्यों और उनके अधिकांशों के किसानों की विद्रोह हुआ करने थे। अन्नाम और कलकूटी आदिवासी के दौरान भारत में किसानों के किसान विद्रोह हुए। राज्य द्वारा अधिक शु-राज्य का निर्धारण, राजस्व बढ़ाने वाले अधिकांशों का अर्थ व्यवस्था और कुछ व्यवस्था आदि कुछ कारणों के कारण किसान विद्रोह हुआ करने थे। इनके कारणों में भारत में औपनिवेशिक शासन आरंभ होने के बाद जो परिवर्तन आयाई गई उनका कारण किसानों और आदिवासियों पर जारी विचारधारा अलग था।

सार 4 में हमने इस तथ्य का उल्लेख किया है कि विश्व प्रचलित ईंधन दहन इंजन कोशरी और उसके घुमावियों को पाराने के लिए अजोबो में भारतीय अर्थव्यवस्था को मदद किया। इस काम में भारतीय अर्थव्यवस्था में निर्यातमूलित परिवर्तन आता था :

- भारतीय सरकारों में विदेश के बड़े-बड़े राज के आ जाये से भारतीय हथकड़ा और इन्फ्लेशन उभरने का विरोध।
- भारत में इन्फ्लेशन की और राज की निर्यातों (जिन कोयल केन्द्रों)
- अमेरिकी यू-एनएन बोलोवन्, यू-एन की आरपी बोर्ड, विदेशों पर अपनी उद्योगों में इन्फ्लेशन माना, अतिरिक्तों बोध पर बतला।
- राजस्व बहुत बढ़ने वाले विदेशीकरण, विदेशीकरण कायदाकार और बहावों के उदय से राष्ट्रीय बचत का सीधे से बढ़ा और बचत का होना।
- अतिरिक्तों से ही में विदेश राजस्व राजस्व का बर्धन, फलदायक से ही और उद्योगों पर परभावना अतिरिक्तों अतिरिक्त का बर्धन।

इन मन्त्रमयी का विस्तार और आधिकारीक मान्यता पर विचारवादी प्रभाव पड़ा। कंपनी और उसके पूर्वी हिस्सों के अधिपति प्रशासन को इसमें से कुछ लेने थे, कहीं पर और कहीं कहीं कुछ नष्ट था। इन मन्त्रों विना-जगन्नाथ हिस्सों की पूर्वी तरफ में राजमन्त्र बनाने वाले विष्णुविन्दू आधिकारीक, व्यापारीक और मन्त्रमयी को कंपनी में प्रवेश दिया। इसके अन्तर्गत, राष्ट्रीय के साथ होने के कारण इस क्षेत्र में बने बसन्तूर की जेलों की और प्रस्ताव हुए। मुक्ति पर प्रभाव पड़ा, पर मन्त्रमयी में पूर्वी भू-राजमन्त्र और पूर्वी वीरता अन्तर्गत की कि इनमें कहीं की भारतीय मन्त्रों का विकास मन्त्र की गयी था।

एक तरफ विविधता अधिक: सैनिकों के कारण सली पर हमला बढ़ा और भारतीय सैन्य विनाश के कारण पर सली हो गई, वहीं दूसरी ओर अमेरिकी सरकार ने विनाशकारी सैनिकों को अवरुद्ध करने दिया; अमेरिकी के कारण और 'प्रायश्चित्त' की विचारणा की हक में सली थे, वे सरकार और उनके सहयोगियों, अमेरिकी सैनिकों, भारतीयों और मजदूरों, का पक्ष लेते थे। औपनिवेशिकता शासन के अधिकार में हीन जातकों और ग़रीबों की विनाश होकर, अपनी रक्त कणों के विनाश विचारों में विविधता का बीजा बोला गया। औपनिवेशी सैनिकों के अग्रगण्य के कारण की विचारणा के अग्रगण्य थे बहुत कमजोर सली थे। पर उनके अधिकार छल होने का एक अग्रगण्य यह था कि उनके अग्रगण्य अग्रगण्यता का एक अग्रगण्य अधिकार में विनाश-विचार का बीजा था।

19.3 कण्डू महाकवचार्थं विनोदः

अंग्रेजी सामान के ली जाए पूरा होवे के बादो ई कियानो और अविविधियों का इस्तेमाल होखे अफ़सोस जन-विरोध के रूप में कुछ बढ़ा। यह भारत की विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग समय में घुसरा। इन विद्रोहों के सामयिकीय कारण अलग-अलग थे, पर कुछ भिन्नताएं यह औद्योगिकीय गोलम गोलम विरोध था। इन संघर्षों में पूरा जमाने के कुछ विद्रोहों का विकास-विचार अंग्रेजी:

29.3.1 संयोजी निर्देश 1763-1800

[illegible]

“गंगादात्री और पक्षीर के नाम से जाने जाने वाले हड्डियों का एक दम है, जो इन एलाओं में अध्ययनका संसार है। और वीर-दात्री-दात्री के नाम से वे अंगारों के प्रमुख हड्डियों में विचार और मृदुलभूतों का प्रचार करने की प्रयोगों का एक दम के लिए मजबूत अंगारों का प्रचार करने हैं। अंगारों के नाम के साथ से हड्डियों का प्रचार मजबूत और मजबूत विचारों का प्रचार के दम में हड्डियों हो गए, जिसके प्रचार को ही प्रचारों करने के लिए म जीव का म कोरें प्रचार। 1772 की दम में अंगारों के प्रचारों को कोरों में हड्डियों का प्रचार मजबूत, प्रचार से प्रचार का प्रचार का दम अंगारों में प्रचार, अंगारों की अंगारों का प्रचार प्रचार करने में।”

यस विरोधी को एक क्रांतियोग दार है कि इसमें हिन्दू और मुसलमानों में कोई भी कड़ा भिन्नता नहीं पायी जाती। इन अहिंसकों के समूह नेताओं में भगत साहब, भुला साहब, भुवानी राठक और जेजी चौधरी सम्मिलित हैं। 1800 ई. तक भारत और विश्व में अहिंसा के नाम से-प्रायः-पत्नी-पति का संबंध होता रहा। अहिंसा में इन विरोधी को दमने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा दी।



100

29.3.2 रंगबर (संगान) का विस्तार शिरोर 1787

1957 के बाद बंगाल पर अहिंसा का प्रचारक आरम्भ हो गया और उन्होंने ऐसी राजस्व रसिदों बसाई, जिनके माध्यम से किसानों से अधिक से अधिक धन निर्धनता का सबूत। इससे आरम्भ आरम्भी जीवन संकट में पड़ गया। रंगपुर और दिनाजपुर बंगाल के ऐसे ही दो जिले थे, जहाँ ईस्ट इंडिया कंपनी और उसके राजस्व अधिकार सभी प्रकार की अवैध धोखे करते जा रहे थे। राजस्व बम्बू अहिंसाही बन गया तथा और जबरदस्ती बम्बू किसानों को चिपटों के साथ किसान बन गई थी। रंगपुर और दिनाजपुर के डेक्कनरों ने भी रंगपुर और उसके एजेंटों से उत्तर बंगाल के इन दो जिलों में आरम्भ पैदा रखा था। जमींदारों पर कर बढ़ा दिया गया, किसान भुगतान किसानों अपना धितों को समझा बहुत था। किसान ने भी रंगपुर और उसके सराफियों की सारी को पुरा करने में अपने को समर्पण का रहे थे। ऐसी रंगपुर और उसके आरम्भ किसानों को पैदा करने में और जोड़े में उनकी बम्बू उद्योग दिया करने में, उनके घर उखाड़ दिया करने में, उनकी पत्नयन मरत कर देने में, जहाँ तक कि उनके घर की औरतों को भी नहीं छोड़ा जाता था।

[illegible]

पदाधिकारीयों पर आक्रमण किया। कई बार उन्होंने सरकारी क्षेत्र में बीरोयों को भी मुक्त किया। विरोधीयों ने अपनी सरकार बनाई, सरकार को सत्त्व देना बंद कर दिया और विरोह का धर्म पन्थों के लिए किसानों में बँध बनाना किया।

29.3.3 चीन विरोह, 1818-31

चीन मुख्य रूप से साम्राज्य के पहाड़ी क्षेत्रों में बने हुए थे। 1818 में साम्राज्य पर अंग्रेजों के आधिपत्य में चीन आक्रमण हुआ और उन्हें यह बताने मिला कि उनके क्षेत्र पर बाहरी लोगों की धमक है जो अंग्रेजों। इसके बजाय, यह भी माना जाता है कि वास्तविक द्वितीय के विरोधी सभी किसानों ने अंग्रेजों द्वारा साम्राज्य पर आधिपत्य बनाने के विरोध में चीन को उठाया था। 1819 में चारों तरफ विरोह की बात फैल गई और चीन में कई छोटे-छोटे क्षेत्रों में वैधानी इनामी को मुक्त-समोटा। अंग्रेजों के खिलाफ चीन सरकार इस प्रकार का आक्रमण करने लगे थे। अंग्रेज सरकार एक तरह अपनी पहिल में उन्हें इनामी की कीर्तिमान करती थी, दूसरी तरह सत्त्वप्राप्त करती थी। इस प्रकार इस चीन में कीर्तिमान करती थी। इसके बाद अंग्रेज अंग्रेज चीन को अपने पक्ष में न कर सके।

29.3.4 मैसूर का विरोह, 1836-31

दौग मुल्तान की अखिर हार के बाद अंग्रेजों ने मैसूर का शासन सीधे शासन सत्त्वप्राप्त करने को चीन दिया और उन पर सत्त्वप्राप्त सत्त्व भोग थी। मैसूर का अपनी का विलीन बनाना था, इस विरोध शासन को मुक्त करने के रूप में सत्त्वप्राप्त ने सत्त्वप्राप्त होकर अंग्रेजों में अखिर राजसत्त्व की भांग थी। अंत में इस राजसत्त्व के बीच का बार किसानों के छोड़ था था। स्वाधीन पदाधिकारीयों के सत्त्वप्राप्त और मुक्त-समोटा ने किसानों की सत्त्वप्राप्त और की सत्त्वप्राप्त बना थी।

किसानों का यह सत्त्वप्राप्त सत्त्वप्राप्त अंतः मैसूर के शासन सत्त्व में विरोह के रूप में मुक्त था। शासन के विरोधी किसानों को सत्त्वप्राप्त के अन्य किसानों का सत्त्वप्राप्त की सत्त्वप्राप्त हुआ और उन्होंने क्षेत्रों के एक सत्त्वप्राप्त देश के एक सत्त्वप्राप्त सत्त्व को अपना सत्त्व बनाया। किसानों ने मैसूर शासन की सत्त्व की सत्त्वप्राप्त की। कई अखिरों के बाद अंग्रेजी क्षेत्र ने शासन पर पुनः सत्त्व का दिया और इसके बाद देश का सत्त्वप्राप्त अंग्रेजों के हाथ में आ गया।

29.3.5 कोल विरोह, 1831-32

विद्रोह के बीच सत्त्वप्राप्तों ने अपने सत्त्वप्राप्तों के मैसूर में सत्त्वप्राप्त रूप में शासन करने का रहे थे। उन्हें छोटा सत्त्वप्राप्त और सत्त्वप्राप्त के राजसत्त्व में कई बार अखिरप्राप्त करने की कीर्तिमान थी, पर उन्होंने इस राजसत्त्व के सत्त्वप्राप्त को सत्त्वप्राप्त कर दिया।

इस प्रकार में अंग्रेजों के सत्त्वप्राप्त और बीच सत्त्वप्राप्त की सत्त्व के अखिर अंग्रेजी सत्त्वप्राप्त और सत्त्वप्राप्त स्वाधीन करने के सत्त्वप्राप्त ने अखिरप्राप्त सत्त्वप्राप्त को अखिरप्राप्त कर दिया है।

विद्रोह और उनके सत्त्वप्राप्त के सत्त्वप्राप्त पर अंग्रेजी सत्त्वप्राप्त सत्त्वप्राप्त होने के बाद सत्त्वप्राप्त के बीच इस प्रकार में बनाने लगे, जिसके सत्त्वप्राप्त करती अखिर अखिरप्राप्त सत्त्वप्राप्त में बाहरी लोगों को सत्त्वप्राप्त होने लगी। अखिरप्राप्त सत्त्वप्राप्त का सत्त्वप्राप्त, सत्त्वप्राप्त, सत्त्वप्राप्त के सत्त्वप्राप्त और अखिरप्राप्त सत्त्वप्राप्त में अंग्रेजी सत्त्वप्राप्त सत्त्वप्राप्त होने में अखिरप्राप्त सत्त्वप्राप्त की सत्त्वप्राप्त सत्त्वप्राप्त का अखिरप्राप्त सत्त्वप्राप्त में यह था। इस सत्त्वप्राप्त ने अखिरप्राप्त सत्त्वप्राप्त का अखिरप्राप्त सत्त्वप्राप्त सत्त्वप्राप्त पर सत्त्वप्राप्त था और यह सत्त्वप्राप्त बाहरी लोगों के खिलाफ विरोह के रूप में बनाने आया। यह विरोह सभी, सत्त्वप्राप्त, सत्त्वप्राप्त और सत्त्वप्राप्त तक फैल गया। सत्त्वप्राप्त ने अखिर बने लोगों पर आक्रमण किया था, उनके पर सत्त्वप्राप्त पर, उनकी सत्त्वप्राप्त मुक्त की गई। इस विरोह को अंग्रेज चीन ने छोड़ता ही गया था।

29.3.6 फरादशी विरोह, 1838-51

फरादशी सत्त्वप्राप्त की सत्त्वप्राप्त फरादशी के हाजी सत्त्वप्राप्त में की थी। शासन में सत्त्वप्राप्त अखिरप्राप्त अखिरप्राप्त सत्त्वप्राप्त विरोध और सत्त्वप्राप्त सत्त्वप्राप्त पर किसानों के सत्त्वप्राप्त के सत्त्वप्राप्त आरंभ हुआ, यह सत्त्वप्राप्त अखिरप्राप्त और अखिरप्राप्त सत्त्वप्राप्त के खिलाफ थे। इस सत्त्वप्राप्त के सत्त्वप्राप्त के रूप में सत्त्वप्राप्त के मैसूर में यह सत्त्वप्राप्त एक सत्त्वप्राप्त सत्त्वप्राप्त सत्त्वप्राप्त हो गया और इसके एक सत्त्वप्राप्त विद्रोह सत्त्वप्राप्त। अखिरप्राप्त सत्त्वप्राप्त का कि सभी लोग सत्त्वप्राप्त हैं और अखिरप्राप्त पर सत्त्वप्राप्त सत्त्वप्राप्त का अखिरप्राप्त है, और किसी को अखिरप्राप्त पर कर अखिरप्राप्त करने का कोई अखिरप्राप्त नहीं है। सत्त्वप्राप्तों ने सभी सत्त्वप्राप्त के सत्त्वप्राप्त में सत्त्वप्राप्त सत्त्वप्राप्त की सत्त्वप्राप्त की और किसानों के सत्त्वप्राप्त को सत्त्वप्राप्त के लिए सत्त्वप्राप्त सत्त्वप्राप्त स्वाधीन की। उन्होंने अखिरप्राप्त की सत्त्वप्राप्तों से किसानों की सत्त्वप्राप्त की और किसानों से सत्त्वप्राप्त कि वे अखिरप्राप्त

विद्रोह में लोगों का साथ दिया। सरदार और जमींदारों ने विद्रोहियों पर आक्रमण करना शुरू किया। लोगों ने वीरतापूर्वक संघर्ष किया, पर अंग्रेजों के पास श्रेष्ठ हथियार थे, अतः उनकी जीत हुई।



1. विद्रोह करने वाला (अनारकली)

सोच समय 1

- 1) क्या आप इस समय में होने वाले विद्रोहों के कुछ सामान्य कारणों की ओर ध्यान देना चाहते हैं? (10) राशियों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

- 2) पुरुषों ने संघर्ष के विधियों को क्या तरीका दिए? पांच चीजों में उत्तर दीजिए।

.....

.....

.....

.....

29.4 1857 के पूर्व के लोकप्रिय विद्रोहों का स्वरूप

विभिन्न इतिहासकारों ने समय-समय परियों में विद्रोह और आक्रामक आंदोलनों को पर्यावरणीय किया है। अंग्रेजों के प्रति स्वातंत्र्यपूर्ण रहने वाले और अक्रान्त व्यवस्था के

मन-बोध प्रतिष्ठानकार अथवा इन विरोधी का जीवन और व्यवस्था को अपने पास मानने है। वे प्रतिष्ठानकार का: इन विरोधी के मन कायसी, व्यवस्था इन विचारों और अधिकांशियों की परिभाषितों (अर्थों के अर्थ के पहले और बाद) को नकारात्मक कर देते हैं। इन विरोधी को "सम्यक्" के विचारों "असम्यक्" के विरोध के रूप में व्यवस्थापित किया जाता है। राष्ट्रवादी प्रतिष्ठानकार अधिकांशिक विरोधी कायसी में विचार और अधिकांशिक प्रतिष्ठान को नकारात्मक मानते हैं और इन प्रकार प्रतिष्ठान जनता के संघर्ष को नकारात्मक करते हैं।

अधिकांशियों और विचारों के विरोध में मतानुवृत्ति रखने वाले प्रतिष्ठानकार की यह बात नहीं मानता जैसे कि यह जनता के अपने अनुकूलों का समुदाय का। विचारों और अधिकांशियों के विरोधी को उनके रूप के जीवित में समझना बहुत जरूरी है, जबी इन प्रकार की समुदाय समझना न के बलकर ही है।

29.4.1 नेतृत्व

इसमें उपर अधिकांशों में नेतृत्व के महान पर विचार-विचारों किया है, क्योंकि इन अधिकांशों को किन लोगों में विचार करना की। इन विचार में इन नेतृत्व का समझना आवश्यक है। प्रतिष्ठान के इन कायसी में अधिकांशों के साथ कई नेता उभरे और प्रतिष्ठान के अपने में साथ गए। इन अधिकांशों का अन्य जिस परिभाषितों में हुआ, उनमें बाहर के लोगों के नेतृत्व की अन्य मुकादमा की। विरोध शुरू होता था और जनता के बीच में ही एक नेता उभर कर सामने आता था। राष्ट्रीय अधिकांश के दौरान ठीक उनके विचारों हुआ। इसमें महान के अपनी सबसे के लोगों में नेतृत्व की कायसी में, एक साथ विचार-कार्य समझाई और अधिकांशों और विचार अधिकांशों में समझाया किया।

इन अधिकांशों का नेतृत्व इन नेतृत्व और अधिकांशों के साथ में बात को विचारों के समुदाय अनुभव की थे। उन्होंने अधिकांशों के विरोध को माना था। फ्रांसीसी अधिकांश इन बात का प्रभाव है कि किस प्रकार अधिकांश नेतृत्व के रूप में उभरकर सामने आए। एक और उन्होंने धर्म की पराजित मुद्रा को स्थापित करने की कोशिश की और धर्म और विचारों की समझाओं को भी समझने की कोशिश की। इन प्रकार, उन्होंने अपने विचारों द्वारा विचारों को संगठित किया। उन्होंने कहा कि भारी भूमि पर धर्म का अधिकांश है और यही का इन पर महान अधिकांश है। इन प्रकार के विचारों द्वारा उन्होंने धर्म की "मुद्रा" की स्थापित की।

29.4.2 भागीदारी और संघर्ष

विचारों और अधिकांशियों के अधिकांशों की बात विरोधपूर्ण देखी है, किन्तु देखने पर बात समझा है कि इनमें एक ही एक सामाजिक और सांस्कृतिक समुदाय की। उदाहरणस्वरूप, 1783 में वेसी मिल के विचारों विरोध हुआ और कपड़ियों पर आक्रमण किया गया। वे कपड़ियों की विचारों के अधिकांश के सामाजिक नेतृत्व का प्रतिनिधित्व करती थी। इसी प्रकार 1832 में लोगों में अपने लोगों को पहचानने हुए अधिकांशों जनता पर आक्रमण नहीं किया। कई बार इन अधिकांशों का सामा सामाजिक अधिकांश की चीन्हा का अधिकांशों का गया और कायसी में उन मुद्रा को भी स्थापित कर दिया गया जिसका अधिकांश की समुदाय में राष्ट्रीय-विचारन बात नहीं था। उदाहरण के लिए, चीन्हाओं का अधिकांश कायसी में अधिकांशों के विचारों विरोध के रूप में हुआ था, पर जो लोग-लोग यह अधिकांश अधिकांश हाथन के विचारों विरोध में बात गया। अधिकांश धर्म प्रभावकारी धर्म के विचारों विरोध करता है, जो विरोध प्रभावकारी धर्म की बात, समुदाय और धर्म के विचारों को होता है। इन कारण अधिकांश के दौरान उनमें बायना में परंपरागत व्यवस्था के प्रति समझन और महारण का बात नहीं होता और वे इनके अधिकांश स्वामी और अधिकांश के लोगों को नहीं मानता करते। इन विरोध उनके रूपों में प्रकाश हुआ, यह धीरे-धीरे जीवन के अधिकांशों में भी प्रकाश हुआ और संगठित विरोध के रूप में भी।

वे विचार और अधिकांशों अधिकांश का-विरोध और सामाजिक विरोध के रूप में सामने आए और इन अधिकांशों की इन विचार में बहुत साथ विरोधकार है। इन अधिकांशों की अधिकांशों का-विरोध के रूप में जाने-जाने होती थी। का: सामाजिक धर्म में यह विचारन भिन्न था। राष्ट्रीय अधिकांश अधिकांशों उन्हें अधिकांशों के रूप में विचार करते हैं, पर विरोधियों की स्वयं-मुद्रा में जनन समुदाय सामने आती है। उदाहरण के लिए, लोगों पर आक्रमण करने के पहले संघर्ष कई बार नेतृत्वों में देते थे। इन प्रकार की नेतृत्वों का उदाहरण को एक-मनसे के लिए किसी "असीम बात" का महारा में किया जाता था। उदाहरणस्वरूप, संघर्ष नेतृत्व विचार और अन्य में बात किया कि कोई चीन्हा के विचारों स्वयं "असीम" (सामाजिक नेतृत्व)

- 2) क्या विभिन्न ज्ञान के विभाग और आदिवासी आंदोलन में किसी प्रकार की पेलना थी? कैसे?

.....

.....

.....

.....

.....

29.5 सारांश

ऊपर हमने तीन विमान और आदिवासी आंदोलनों की चर्चा की, उनके बारे में यह कहा जा सकता है कि ये आंदोलन स्थानीय प्रकृति के थे और एक-दूसरे से विनम्रता सम्भव है। पर यह सच पूर्णतः सही नहीं है, क्योंकि इन आंदोलनों में जातीय और धार्मिक रूप की कटपट्टीएं एक साथ मौजूद हैं। निश्चित रूप से इस समय इन आंदोलनों को जोड़ने वाली एक अंतर्मुख प्रेरणा का विकास नहीं हो पाया था। अतः ये अलग-अलग पड़ गए थे। इस कारण से इन आंदोलनों का राष्ट्रीय आंदोलनों का प्रभाव अत्यंत कम रहा। एक ही में आंदोलन एक-दूसरे से अलग-अलग विकसित हो रहे थे, दूसरे अंग्रेजों के पास एक संगठित शक्ति थी, अनेकानुस अचूत जाति-राज्य थे। अतः अंग्रेजों की सफलता अनिवार्य थी। फिर भी आंदोलन की दृष्टि अधिष्ठाता के रूप में इन आंदोलनों का अपना महत्व है। विभिन्न साहित्य के अंत में 1857 का विद्रोह हुआ, जो इन आंदोलनों का परिणाम था। इस आंदोलन में अंग्रेजों के विमान विमानों की अंतर्मुख के साथ-साथ अलग से अन्य राज्यों का आंदोलन की अधिष्ठाता हुआ। इस विद्रोह में जातीय, धार्मिक और जातिगत संघर्ष अपनी पीछे छूट गए। उसने देश के कई हिस्सों में एक साथ अनेकी गठन को कृषि की। अगली दो दशकों में हम 1857 के विद्रोह का अध्ययन करेंगे।

29.6 चौथे प्रश्नों के उत्तर

चौथे प्रश्न 1

- 1) देखें साथ 29.3
- 2) देखें साथ 29.3.6

चौथे प्रश्न 2

- 1) देखें उपभाग 29.4.1
- 2) देखें उपभाग 29.4.2